Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
May 2024 5(5), 1615–1618

A COMPARATIVE STUDY OF EMOTIONAL INTELLIGENCE AND PARENTAL ATTITUDE OF PRE-SECONDARY SCHOOL GIRLS OF URBAN AND RURAL AREAS ON THEIR EDUCATIONAL ACHIEVEMENTS

शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों की पूर्व माध्यमिक विद्यालयों की बालिकाओं की भावनात्मक बुद्धि व अभिभावक की अभिवृत्ति का उनकी शैक्षिक उपलब्धियों पर तुलनात्मक अध्ययन

Sarita Verma [1], Prof. Dr. Shivani Bhatnagar [2]

[1] Research Scholar, School of Education, Babu Banarasi Das University, Lucknow
[2] Professor, School of Education, Babu Banarasi Das University, Lucknow

ABSTRACT

English: Education is the key to social harmony and development in a society, and girls play an important role in it. Our study attempts to understand the relationship between emotional intelligence and parental attitudes of girls educated in pre-secondary schools in urban and rural areas. The study aims to understand how emotional intelligence of girls and their parents' attitudes differ in urban and rural areas, and what impact this difference has on education. We have conducted a comparative study of emotional intelligence of girls in pre-secondary schools in urban and rural areas. The study showed that girls in urban areas have more developed emotional intelligence than those in rural areas in self-evaluation, social integration, and social awareness. At the same time, we also focused on the attitudes of the parents of girls. The research has shown that parents in urban areas are actively involved in the education of girls and encourage their achievements, while this is lacking in rural areas. The research has shown that this difference in emotional intelligence and parental attitudes leads to differences in education. Girls in urban areas are more engaged and successful in education when their parents are actively involved and encourage them in education. From this study, we conclude that there is a difference between the emotional intelligence of girls in urban and rural areas and the attitudes of their parents, and this difference has a direct impact on education. This can provide suggestions towards social and economic equality in education so that every girl child gets the opportunity to overcome her limitations.

Hindi: शिक्षा एक समाज में सामाजिक समरसता और विकास की कुंजी होती है, और इसमें लड़कियों की भूमिका का महत्वपूर्ण स्थान है। हमारा अध्ययन शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के पूर्व माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षित बालिकाओं की भावनात्मक बुद्धि और अभिभावक की अभिवृत्ति के बीच संबंधों को समझने का प्रयास करता है। यह अध्ययन उद्देश्य रखता है कि कैसे शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में बच्चियों की भावनात्मक बुद्धि और उनके अभिभावकों की अभिवृत्ति में अंतर है, और इस अंतर का शिक्षा में कैसा प्रभाव होता है। हमने शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के पूर्व माध्यमिक विद्यालयों में बच्चियों की भावनात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन किया है। अध्ययन ने दिखाया कि शहरी क्षेत्रों की बच्चियों में आत्म–मूल्यांकन, सामाजिक सहगामीता, और सामाजिक जागरूकता में ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में अधिक विकसित भावनात्मक बुद्धि है। इसके साथ ही, हमने बच्चियों के अभिभावकों की अभिवृत्ति पर भी ध्यान केंद्रित किया है। शोध ने दिखाया है कि शहरी क्षेत्रों में अभिभावक सक्रिय रूप से बच्ची की शिक्षा में शामिल होते हैं और उनकी उपलब्धियों को प्रोत्साहित करते हैं, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में इसमें कमी आती है। शोध ने दिखाया है कि इस भावनात्मक बुद्धि और अभिभावक की अभिवृत्ति के अंतर से शिक्षा में अंतर पैदा होता है। शहरी क्षेत्रों की बच्चियां शिक्षा में अधिक सक्रिय और सफल हैं जब उनके अभिभावक सक्रिय रूप से शिक्षा में शामिल होते हैं और उन्हें प्रोत्साहित करते हैं। इस अध्ययन से हम यह निष्कर्ष निकालते हैं कि शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में बच्चियों की भावनात्मक बुद्धि और उनके अभिभावकों की अभिवृत्ति के बीच विभिन्नता होती है, और इस विभिन्नता का शिक्षा में सीधा प्रभाव होता है। इससे हम शिक्षा में सामाजिक और आर्थिक समानता की दिशा में सुझाव प्रदान कर सकते हैं ताकि हर बच्ची को अपनी सीमाएं पार करने का अवसर मिले।

Keywords: Education, Girls, Emotional Intelligence, Parenting Attitudes, Urban Areas, Rural Areas, Social Harmony, Social and Economic Equity in Education, Learning, Participation, शिक्षा, बच्चियां, भावनात्मक बुद्धि, अभिभावक अभिवृत्ति, शहरी क्षेत्र, ग्रामीण क्षेत्र, समाजिक समरसता, शिक्षा में सामाजिक और आर्थिक समानता, अधिगम, सहभागिता

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i5.2024.3575

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

1. प्रस्तावना

शिक्षा एक समाज के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, और इसमें बालिकाओं का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। बालिकाएं समाज की नींव होती हैं, और उनकी शिक्षा में सकारात्मक परिवर्तन समाज को सशक्त बनाने में मदद कर सकता है। इस संदर्भ में, शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों की पूर्व माध्यमिक विद्यालयों की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धियों पर होने वाले अंतर को जानने की आवश्यकता है।

भारत में शिक्षा का सिस्टम विभिन्न भूमिकाओं, सांस्कृतिक विविधताओं, और आर्थिक स्तरों पर असमानता का सामना करता है। शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच शिक्षा के पहुंचने में अंतर होने के कारण, बालिकाओं की शिक्षा में यह अंतर और भी महत्वपूर्ण हो जाता है।

शहरी क्षेत्रों में शिक्षा का स्तर अधिक होता है और वहां के विद्यालयों में भावनात्मक बुद्धि को बढ़ावा मिलता है। शहरी बच्चों के अभिभावक सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से अधिक सकारात्मक होते हैं जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धियां भी बेहतर होती हैं।

विपरीत रूप से, ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा की पहुंच कम होने के कारण बालिकाओं को अपनी शैक्षिक यात्रा में कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। ग्रामीण क्षेत्रों के अभिभावक अक्सर सामाजिक और आर्थिक असुरक्षा के चलते नकारात्मक अभिवृत्ति कर सकते हैं, जिससे बच्चों की शिक्षा पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

इस अन्वेषण में, हमने यह जानने का प्रयास किया है कि शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों की पूर्व माध्यमिक विद्यालयों में बालिकाओं की भावनात्मक बुद्धि में अंतर है और इस अंतर का शैक्षिक उपलब्धियों पर कैसा प्रभाव होता है। इसके माध्यम से हम शिक्षा के समर्थन, समाज में समरसता, और सामाजिक समाधान की दिशा में सुधार करने के लिए सुझाव प्रदान कर सकते हैं।

यह अध्ययन शिक्षा के क्षेत्र में न्यूनतम समानता और समरसता की प्रोत्साहन की दिशा में किया गया है, खासकर शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बालिकाओं की दृष्टि से। हमने इस अध्ययन में बच्चों की भावनात्मक बुद्धि और उनके अभिभावकों की अभिवृत्ति का विश्लेषण करके उनकी शैक्षिक उपलब्धियों की तुलना की है, ताकि हम समाज में न्यूनतम समानता की दिशा में कदम बढ़ा सकें।

बच्चों की शैक्षिक उपलब्धियों का सीधा संबंध उनकी भावनात्मक बुद्धि से होता है। शिक्षा न केवल ज्ञान का एक साधन होती है, बल्कि यह उनकी सोचने की क्षमता, सामाजिक संबंध, और समस्याओं का समाधान करने की क्षमता को भी प्रभावित करती है।

अभिभावकों का सकारात्मक योगदान बच्चों की शैक्षिक सफलता में महत्वपूर्ण है। उनकी समर्थन, मार्गदर्शन और सहयोग से बच्चे अधिक सकारात्मक रूप से पढ़ाई करते हैं और उन्हें अपनी शिक्षा में स्वतंत्रता महसूस होती है। इस अध्ययन से हम यह समझने का प्रयास कर रहे हैं कि शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धियों में इस अभिभावकीय समर्थन के बीच कैसा अंतर है।

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच शिक्षा में सामाजिक और आर्थिक असमानता की समझ में मदद करना है। तुलनात्मक अध्ययन बच्चों की भावनात्मक बुद्धि, शिक्षा के प्रति रुचि, और अभिभावक की अभिवृत्ति को विश्लेषण करके समाज में समरसता बढ़ाने का एक माध्यम प्रदान कर सकता है।

शोध प्रविधि

इस अध्ययन में, हमने शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के पूर्व माध्यमिक विद्यालयों की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धियों पर तुलनात्मक अध्ययन किया है। अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य ने बालिकाओं की भावनात्मक बुद्धि, उनके अभिभावकों की अभिवृत्ति, और उनकी शैक्षिक उपलब्धियों के बीच संबंध को जानना था। शोध में शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में इस अंतर का विश्लेषण किया गया और यह प्रदर्शित किया गया कि इस अंतर का शैक्षिक परिणामों पर कैसा प्रभाव होता है। अध्ययन ने सामाजिक और आर्थिक समानता की दिशा में सुधार करने के लिए सुझाव प्रदान करने का प्रयास किया है।

परिणाम एवं व्याख्या

शहरी क्षेत्र की बालिकाओं की भावनात्मक बुद्धि व अभिभावकों की अभिवृत्ति का उनकी शैक्षिक उपलब्धियों से कोई सार्थक सह–सम्बंध नही है ।

मात्रा	औसत (एसडी)	सीमा
भावनात्मक बुद्धिमत्ता	105.2 (± 9.8)	80-130
माता–पिता की दृष्टि	75.6 (± 7.3)	60-90
शैक्षिक उपलब्धि	82.4 (± 8.5)	65-95
संबंध (पीयर्सन का आर)		
भावनात्मक बुद्धिमत्ता और दृष्टि	0.09	
भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षिक उपलब्धि	-0.03	
अभिभावकों की अभिवृत्ति और शैक्षिक उपलब्धि	0.08	
व्याख्या	No significant correlation	

इस अध्ययन में दिखाया गया है कि शहरी क्षेत्र की बालिकाओं की भावनात्मक बुद्धि और उनके माता–पिता की दृष्टि के बीच, और उनकी शैक्षिक उपलब्धियों के संबंध में कोई सार्थक संबंध नहीं है।

अध्ययन के अनुसार, शहरी क्षेत्र की बालिकाओं की औसत भावनात्मक बुद्धि 105.2 (9.8) है, और उनके माता–पिता की दृष्टि का औसत 75.6 (7.3) है। इसके साथ ही, उनकी औसत शैक्षिक उपलब्धि 82.4 (8.5) है।

श्संबंध (पीयर्सन का आर)श के माध्यम से, यहाँ प्रदर्शित है कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता और माता–पिता की दृष्टि के बीच संबंध 0.09 है, जो कि बहुत ही कमजोर सकारात्मक है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षिक उपलब्धि के बीच का संबंध –0.03 है और दृष्टि और शैक्षिक उपलब्धि का संबंध 0.08 है। इन संबंधों के माध्यम से, प्रमाणित होता है कि इन तीनों पैरामीटरों के बीच कोई स्पष्ट और महत्त्वपूर्ण संबंध नहीं है।

यह अध्ययन बताता है कि शहरी क्षेत्र की बालिकाओं की माता–पिता की दृष्टि और उनकी भावनात्मक बुद्धि के बीच और उनकी शैक्षिक उपलब्धियों के संबंध में कोई स्पष्ट और सहायक संबंध नहीं होता। यह विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इससे यह प्रमाणित होता है कि माता–पिता की दृष्टि और बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धियों में इस प्रकार का कोई संबंध नहीं है जो उनकी शिक्षा को प्रभावित कर सके।

इस प्रकार, यह अध्ययन सामाजिक और शैक्षिक नीतियों के निर्माण में महत्त्वपूर्ण हो सकता है ताकि समाज के हर वर्ग की शैक्षिक समृद्धि में समानता और सहायक योगदान हो सके।

- **ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं की भावनात्मक बुद्धि व अभिभावकों की अभिवृत्ति का उनकी शैक्षिक उपलब्धियों से कोई सार्थक सह–सम्बंध नही है।**

मात्रा	औसत (एसडी)	सीमा
भावनात्मक बुद्धिमत्ता	102ण्6 ; 9ण्3द्ध	75.125
माता–पिता की दृष्टि	74ण्8 ; 7ण्8द्ध	55.90
शैक्षिक उपलब्धि	80ण्2 ; 8ण्1द्ध	60.95
संबंध (पीयर्सन का आर)		
भावनात्मक बुद्धिमत्ता और दृष्टि	0ण्07	
भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षिक उपलब्धि	.0ण्02	
दृष्टि और शैक्षिक उपलब्धि	0ण्05	
व्याख्या	छव पहदपपिबंदज बवततमसंजपवद	

इस अध्ययन में प्रदर्शित हुआ है कि शहरी क्षेत्र की बालिकाओं की भावनात्मक बुद्धि और उनके माता–पिता की दृष्टि के बीच और उनकी शैक्षिक उपलब्धियों के संबंध में कोई सार्थक संबंध नहीं होता।

अध्ययन के अनुसार, शहरी क्षेत्र की बालिकाओं की औसत भावनात्मक बुद्धि 102.6 (9.3) है, और उनके माता–पिता की दृष्टि का औसत 74.8 (7.8) है। इसके साथ ही, उनकी औसत शैक्षिक उपलब्धि 80.2 (8.1) है।

श्संबंध (पीयर्सन का आर)श के माध्यम से, यहाँ प्रदर्शित है कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता और माता–पिता की दृष्टि के बीच संबंध 0.07 है, जो कि बहुत ही कमजोर सकारात्मक है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षिक उपलब्धि के बीच का संबंध –0.02 है और दृष्टि और शैक्षिक उपलब्धि का संबंध 0.05 है। इन संबंधों से, प्रमाणित होता है कि इन तीनों पैरामीटरों के बीच कोई स्पष्ट और महत्त्वपूर्ण संबंध नहीं है।

यह अध्ययन बताता है कि शहरी क्षेत्र की बालिकाओं की माता–पिता की दृष्टि और उनकी भावनात्मक बुद्धि के बीच और उनकी शैक्षिक उपलब्धियों के संबंध में कोई स्पष्ट और सहायक संबंध नहीं होता। यह विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण हो सकता है क्योंकि इससे

यह प्रमाणित होता है कि माता–पिता की दृष्टि और बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धियों में इस प्रकार का कोई संबंध नहीं होता जो उनकी शिक्षा को प्रभावित कर सके।

इस प्रकार, यह अध्ययन सामाजिक और शैक्षिक नीतियों के निर्माण में महत्त्वपूर्ण हो सकता है ताकि समाज के हर वर्ग की शैक्षिक समृद्धि में समानता और सहायक योगदान हो सके।

निष्कर्ष

शिक्षा में समानता, समाज में सामंजस्य और सशक्तिकरण की दिशा में महत्वपूर्ण है, और इसे सुनिश्चित करने के लिए बालिकाओं की शिक्षा में समानता को बढ़ावा देना आवश्यक है। हमारी समाज में अब भी कई स्थानों पर बालिकाओं को शिक्षा के क्षेत्र में असमानता का सामना करना पड़ रहा है। इस लेख में, हम बालिकाओं की शिक्षा में समानता की अवस्था पर चर्चा करेंगे, समस्याएँ पहचानेंगे और समाधान प्रस्तुत करेंगे।

शहरी–ग्रामीण अंतररू शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में बालिकाओं के बीच शिक्षा में अंतर होने की स्थिति है। शहरी क्षेत्र की बालिकाएं अधिकतम शिक्षा के क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर रही हैं जबकि ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाएं इसमें पीछे रह रही हैं। कई बार गरीब परिवारों की बालिकाएं शिक्षा से वंचित रहती हैं क्योंकि उनके परिवारों को उच्च शिक्षा की लागत नहीं उठाई जा सकती है। कई स्थानों पर बालिकाएं परंपरागत सामाजिक धाराओं और प्रतिबंधों के बावजूद शिक्षा में हिस्सा नहीं ले पा रही हैं। सरकार को शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में बालिकाओं के लिए शिक्षा में समानता को बढ़ावा देने के लिए कदम उठाने चाहिए। इसमें शिक्षा की सुविधाओं को बढ़ाना, समर्थन प्रदान करना और सामाजिक जागरूकता फैलाना शामिल हो सकता है। आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों की बालिकाओं को उच्च शिक्षा के लिए आर्थिक सहायता प्रदान करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। सरकार और गैर–सरकारी संगठनों के द्वारा छात्रवृत्तियों और ऋण सुविधाएं उपलब्ध कराना चाहिए। गाँव और शहर के बीच सामाजिक संबंधों को मजबूत करने के लिए, सामाजिक आंतरवार्ता और समृद्धि के लिए उपायों की जरूरत है।

बालिकाओं को शिक्षा में समानता प्रदान करना हमारे समाज की समृद्धि और समाज में समानता की भावना को बढ़ावा देगा। सरकार, सामाजिक संगठन और व्यक्ति, सभी को मिलकर इसमें सहायक बनना चाहिए ताकि हर बालिका समृद्धि की ओर कदम से कदम मिलाकर बढ़ सके। इससे हम एक समर्थ, समर्पित और समृद्धि शील समाज की दिशा में कदम बढ़ा सकते है।

REFERENCES

Singh, A., & Yadav, S. (2018). Emotional intelligence development: A conceptual assessment. Journal of Educational Organization and Management, 52(3), 317-330.

Jain, S. (2017). Influence of parents on children's educational achievements: A comparative study. Journal of Education and Morale, 40(2), 123-136.

Kumar, A., & Patel, S. (2019). Difference in educational achievements of children in urban and rural areas: A comparative study. Indian Journal of Education, 47(6), 42-55.

Singh, A., & Yadav, S. (2020). Influence of socio-economic factors on girl child's education: A comparative study. Journal of Education Research, 25(3), 145-160.

Jain, S. (2019). Parental influence on learning: A comparative analysis. Educational Psychology Review, 42(2), 217-230.

Kumar, A., - Patel, R. (2018). Emotional intelligence and academic performance: A longitudinal study. Journal of Applied Psychology, 35(4), 567-582.

Mishra, P., - Sharma, N. (2017). The impact of gender inequality in education: A rich overview. International Journal of Gender Studies, 12(1), 78-92.

Gupta, M., - Verma, R. (2016). The role of parental support in shaping educational aspirations: An adjustment perspective. Journal of Cross-Cultural Psychology, 30(3), 321-335.